

कच्चे तेल का मूल्य और भारत

यह एडिटरियल 06/06/2023 को 'द हट्टि' में प्रकाशित "Eye on oil: on oil prices and India" लेख पर आधारित है। इसमें ओपेक प्लस देशों द्वारा कच्चे तेल के उत्पादन में की जाने वाली कमी और उत्पन्न चुनौती के संदर्भ में भारत के लिये आगे की राह के बारे में चर्चा की गई है।

प्रलिस:

OPEC, [OPEC+](#)

मेन्स:

OPEC+, कच्चे तेल के उत्पादन में की जाने वाली कमी के कारण, भारत पर प्रभाव और आगे की राह

कच्चे तेल उत्पादकों का विश्व का सबसे बड़ा समूह (जैसे आमतौर पर ओपेक प्लस (OPEC+) के रूप में जाना जाता है) तेल उत्पादन में की जाने वाली कटौती को वर्ष 2024 तक बढ़ाने पर सहमत हुआ है क्योंकि यह वैश्विक आर्थिक मंदी को लेकर बढ़ती चिंताओं के बीच तेल मूल्यों में होने वाली गिरावट को रोकने हेतु समर्पित है। ओपेक के प्रमुख एवं अग्रणी उत्पादक सऊदी अरब ने भी जुलाई 2023 में अतिरिक्त 1 मिलियन बैरल प्रतिदिन (bpd) की उत्पादन कटौती करने की सवैच्छिक प्रतिज्ञा की है।

20 से अधिक सदस्य देशों के ओपेक प्लस समूह (जो बढ़ती मांग की स्थिति में मूल्यों की स्थिरता हेतु आपूर्ति को कम करने का प्रयास कर रहा है) ने अप्रैल में आश्चर्यजनक रूप से 1.66 मिलियन bpd की अतिरिक्त उत्पादन कटौती की घोषणा की थी। भारत के लिये (जो कच्चे तेल की अपनी आवश्यकताओं के 80% से अधिक की पूर्ति आयात से करता है) सऊदी अरब एवं ओपेक प्लस द्वारा की गई कटौती की घोषणा से कुछ चिंता उत्पन्न हुई है क्योंकि इससे वैश्विक तेल मूल्यों में वृद्धि हो सकती है। यद्यपि भारत द्वारा रूस से कच्चे तेल की खरीद में तेजी से वृद्धि के साथ भारत द्वारा तेल के आयातित बैरल के लिये भुगतान की जाने वाली कीमत में भी लगातार गिरावट आ रही है।

ओपेक प्लस:

- ओपेक प्लस (OPEC+) **23 तेल निर्यातक देशों का एक समूह** है जो नियमि रूप से यह तय करने के लिये बैठकें करता है कि विश्व बाजार में कितने कच्चे तेल की बिक्री की जाएगी।
 - इस समूह में मूल रूप से पेट्रोलियम निर्यातक देशों का संगठन/ओपेक (Organization of the Petroleum Exporting Countries-OPEC) के रूप में 13 सदस्य देश शामिल थे जो मुख्यतः मध्य-पूर्वी देश और अफ्रीकी देश हैं।
- ओपेक का **गठन वर्ष 1960** में किया गया था, जिसका उद्देश्य विश्व भर में तेल की आपूर्ति और इसका मूल्य तय करना था।
 - वर्ष 2016 में जब तेल की कीमतें निम्न स्तर पर थीं तब ओपेक समूह ने 10 अन्य तेल उत्पादकों के साथ मिलकर ओपेक प्लस का गठन किया था।
 - इस वसितारित समूह के सदस्यों में रूस भी शामिल है जो विश्व का तीसरा सबसे बड़ा तेल उत्पादक देश है, जो प्रतिदिन 10 मिलियन बैरल से अधिक तेल का उत्पादन करता है।
- ओपेक प्लस देश संयुक्त रूप से **विश्व के कुल कच्चे तेल के लगभग 40% भाग का उत्पादन करते हैं।**
 - उल्लेखनीय है कि ओपेक देश **विश्व के कच्चे तेल के लगभग 30% भाग का उत्पादन करते हैं।**
 - सऊदी अरब** इस समूह का सबसे बड़ा एकल तेल आपूर्तिकर्ता है, जो **प्रतिदिन 10 मिलियन बैरल से अधिक तेल का उत्पादन करता है।**
- ओपेक प्लस बाजार को संतुलित करने के लिये आपूर्ति और मांग में हस्तक्षेप करता है। जब तेल की मांग कम होती है तो यह आपूर्ति कम करके मूल्यों को उच्च बनाए रखता है। यह बाजार में तेल की आपूर्ति को बढ़ाकर कीमतों को कम भी कर सकता है।

ओपेक प्लस समूह द्वारा तेल उत्पादन में की जाने वाली कटौती के कारण:

- वैश्विक मांग में कमी से संबंधित चिंताएँ:**
 - कोविड-19 लॉकडाउन के बाद चीन की आर्थिक सुधार की गतिमंद पड़ रही है जिससे और भी चिंताएँ बढ़ गई हैं। चूँकि चीन, विश्व का दूसरा सबसे बड़ा तेल उपभोक्ता है इससे वैश्विक स्तर पर तेल की मांग एवं मूल्यों पर प्रभाव पड़ सकता है।

- बाज़ार गतिशीलता में हस्तक्षेप (रूसी तेल की कीमतों पर पश्चिमी देशों द्वारा नयितरण लगाना)
- हाल के महीनों में एक और बैंकगि संकट की आशंका ने नविशकों को जोखिमपूर्ण परसिंपत्तियों जैसे कितेल मूल्यों से संबद्ध स्टॉक को बेचने के लिये प्रेरित किया है।
- वकिसति देशों में विकास की मंद गति और कम मांग तथा वैश्विक मंदी के भय से तेल की कीमतें कम हो सकती हैं।
- **अमेरिका में ऋण सीमा संबंधी वार्ताओं (debt ceiling negotiations)** ने भी इसे प्रभावित किया है। नविशकों को भय है कि इससे तेल की मांग पर नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है और कीमतें गिर सकती हैं, जिससे बाज़ार में अनश्चितता उत्पन्न हो सकती है।
- **सटोरियों को दंडित करना:**
 - नयोजित कटौती से तेल की कीमतों में गरिवट पर दाँव लगाने वाले तेल के सटोरियों/शॉर्ट सेलर (short sellers) पर भी नकारात्मक प्रभाव पड़ेगा।
 - सऊदी अरब के ऊर्जा मंत्री ने व्यापारियों को तेल बाज़ार पर भारी सट्टेबाजी में लपित होने के वरिद्ध चेतावनी दी है। कुछ नविशकों ने इसे संभावित उत्पादन कटौती के संकेत के रूप में देखा है।
- **अमेरिका द्वारा तेल उत्पादन में वृद्धि:**
 - प्रौद्योगिकी उन्नति के कारण अमेरिकी में कच्चे तेल का उत्पादन वर्ष 2023 में 5.1% और वर्ष 2024 में 1.3% तक बढ़ने का अनुमान है। इससे वैश्विक तेल आपूर्ति और मूल्यों पर उल्लेखनीय प्रभाव पड़ सकता है।
- **अमेरिका के साथ तनाव:**
 - अमेरिका NOPEC (No Oil Producing and Exporting Cartels Act) पारित करने पर वचिर कर रहा है जिससे बाज़ार में इसका अधिक हस्तक्षेप साबित होने पर अमेरिकी क्षेत्र में ओपेक की संपत्तियों को जब्त किया जा सकेगा। इसका उद्देश्य मूल्य हेरफेर पर रोक लगाना और नषिपक्ष प्रतसिपर्द्धा को बढ़ावा देना है लेकिन इसे संभावित प्रतशिोध के रूप में देखते हुए ओपेक द्वारा इसकी आलोचना की जा रही है।
 - ओपेक प्लस ने पिछले वर्ष अंतरराष्ट्रीय ऊर्जा एजेंसी (IAE) द्वारा तेल स्टॉक जारी करने की वकालत करने की आलोचना की है, जहाँ वह इसे राजनीतिक रूप से प्रेरित कदम मानता है क्योंकि अमेरिका IAE का सबसे बड़ा वतितीय दाता है।
 - IEA का तर्क था कि तेल मूल्यों को कम करने के लिये ये आवश्यक थे लेकिन कीमतों में मज़बूती का IAE का पूर्वानुमान सार्थक साबित नहीं हुआ।
 - इसके अलावा संयुक्त राज्य अमेरिका (जिसने अधिकांश स्टॉक जारी किये) ने कहा था कि वह वर्ष 2023 में कुछ तेल वापस खरीदेगा, लेकिन बाद में उसने इससे मना कर दिया।
- **अपने मुख्य नरियात मूल्य को बनाए रखना:**
 - ओपेक पर्यवेक्षकों का यह भी कहना है कि मुद्रास्फीति और मुद्रा अवमूल्यन की स्थिति में तेल के मुख्य नरियात मूल्य को बनाए रखने के लिये समूह को सांकेतिक तेल मूल्यों (nominal oil prices) की आवश्यकता है।
 - हाल के वर्षों में पश्चिमी देशों द्वारा अपनी मुद्रा का प्रसार करने के कारण अमेरिकी डॉलर (जिस मुद्रा में तेल का कारोबार होता है) के मूल्य में कमी आई है।

इस उत्पादन कटौती का भारत पर प्रभाव:

भारत विश्व का तीसरा सबसे बड़ा तेल उपभोक्ता है और यह कच्चे तेल की अपनी कुल आवश्यकता के 80% से अधिक का आयात करता है। भारत अपने कच्चे तेल आयात का लगभग 70% ओपेक सदस्यों से प्राप्त करता है। दशकीय तुलना करें तो ओपेक से तेल आयात में भारी कमी आई है जहाँ यह पूर्व के 87% से घटकर वर्ष 2021-22 में 70% रह गया है। हालाँकि ओपेक की अभी भी भारत के तेल आयात में प्रमुख हसिसेदारी है। इस स्थिति में ओपेक प्लस द्वारा कम उत्पादन का भारत पर नश्चिति ही नकारात्मक प्रभाव पड़ेगा। **इसके कुछ संभावित प्रभाव नमिनलखिति होंगे:**

- **आयातित मुद्रास्फीति (Higher Imported Inflation) का उच्च होना:** उत्पादन में कटौती से कच्चे तेल की कीमतें बढ़ेंगी जिससे भारत के आयात मूल्य में वृद्धि होगी और **चालू खाता घाटे (current account deficit)** की स्थिति **सकल घरेलू उत्पाद (GDP)** के स्तर पर 0.4% तक प्रभावित होगी। इसका असर पेट्रोल और डीजल की खुदरा कीमतों पर भी पड़ेगा, जो पहले से ही देश भर में रकिरिड उच्च स्तर पर हैं। पेट्रोल एवं डीजल की कीमतों में बढ़ोतरी से घरेलू वस्तुओं की कीमतों में और भी वृद्धि होगी।
- **आर्थिक विकास (Lower Economic Growth) में कमी आना:** तेल के अधिक मूल्य से वभिन्न क्षेत्रों में उत्पादन एवं परिवहन की लागत में वृद्धि होगी जिससे उनकी लाभप्रदता एवं प्रतसिपर्द्धात्मकता प्रभावित होगी। इससे उपभोक्ताओं के प्रयोज्य/उपभोज्य आय (disposable income) में भी कमी आएगी, जिससे वस्तुओं एवं सेवाओं की उनकी मांग प्रभावित होगी। उच्च मुद्रास्फीति और नमिन आर्थिक वृद्धि की स्थिति से मौद्रिक नीति के लिये भी चुनौती उत्पन्न होगी।
- **राजकोषीय घाटा (Higher Fiscal Deficit) का उच्च होना:** तेल की कीमतों में वृद्धि से सरकार पर सब्सिडी का बोझ बढ़ेगा। इससे राजकोषीय घाटे में और भी वृद्धि होगी तथा आधारभूत संरचना एवं सामाजिक कल्याण पर सार्वजनिक व्यय में कमी आएगी।
- **बाह्य नरिभरता के प्रतभिदयता (Higher External Vulnerability):** तेल के उच्च मूल्य से **वदिशी मुद्रा भंडार** में कमी आने के साथ बाह्य उधारी पर भारत की नरिभरता को बढ़ावा मलिया। इससे भारत मुद्रा में उतार-चढ़ाव के साथ वैश्विक वतितीय असंतुलन के प्रतसिंधेनशील होगा। तेल के उच्च मूल्य से व्यापार संतुलन (trade balance) तथा अन्य देशों के साथ भारत की आयात-नरियात स्थिति (terms of trade) भी प्रभावित होगी।

भारत के लिये आगे की राह:

- **ऊर्जा स्रोतों में वविधिता लाना:** भारत वैकल्पिक एवं नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों को बढ़ावा देने और इसमें नविश करने के रूप में अपने ऊर्जा मशिरण में वविधिता लाने पर ध्यान केंद्रित कर सकता है। इसमें **सौर**, पवन, **पनबजिली** और **परमाणु ऊर्जा** के उपयोग का वसितार करना शामिल है। **जीवाश्म ईंधन** पर अपनी नरिभरता कम करके भारत तेल आयात के लिये ओपेक पर अपनी नरिभरता कम कर सकता है।

- **घरेलू तेल एवं गैस उत्पादन को बढ़ावा देना:** भारत के पास तेल और गैस के पर्याप्त भंडार मौजूद हैं। सरकार घरेलू एवं वदेशी तेल कंपनियों को तटवर्ती और अपतटीय दोनों तरह की अन्वेषण एवं उत्पादन गतिविधियों में संलग्न होने के लिये प्रोत्साहित कर सकती है।
 - कर प्रोत्साहन और सुव्यवस्थित नियामक प्रक्रियाओं जैसी अनुकूल नीतियों को कार्यान्वित करने से निवेश में वृद्धि को बढ़ावा मलि सकता है और घरेलू उत्पादन में वृद्धि हो सकती है।
- **ऊर्जा दक्षता को बढ़ावा देना:** भारत परिवहन, औद्योगिक प्रक्रियाओं और भवनों सहित विभिन्न क्षेत्रों में ऊर्जा दक्षता उपायों को प्राथमिकता दे सकता है। इसमें ऊर्जा-कुशल तकनीकों को अपनाना, औद्योगिक प्रक्रियाओं का अनुकूलन करना और मजबूत ऊर्जा संरक्षण उपायों को लागू करना शामिल है।
- **अंतरराष्ट्रीय साझेदारी को सुदृढ़ करना:** भारत तेल के वैकल्पिक स्रोतों को सुरक्षित करने के लिये ओपेक से इतर तेल उत्पादक देशों के साथ रणनीतिक समन्वय को बढ़ावा दे सकता है। इसके साथ ही रूस, संयुक्त राज्य अमेरिका, कनाडा एवं अन्य ऐसे देशों के साथ संबंधों को सुदृढ़ करने से आयात स्रोतों में विविधता लाने और अनुकूल आपूर्ति समझौतों पर वार्ता करने के अवसर मलि सकते हैं।
- **रणनीतिक तेल भंडार वकिसति करना:** पर्याप्त रणनीतिक पेट्रोलियम भंडार (Strategic Oil Reserves) बनाए रखना, आपूर्ति में व्यवधान या मूल्य में उतार-चढ़ाव के दौरान बफर के रूप में कार्य कर सकता है। भारत को आपात स्थितिके दौरान तेल की स्थिर आपूर्ति सुनिश्चित करने और ओपेक के नरिणयों पर नरिभर भेद्यता को कम करने के लिये अपने रणनीतिक तेल भंडार का नरिमाण एवं वसितार करना जारी रखना चाहिये।
- **अनुसंधान एवं वकिसा को बढ़ावा देना:** उन्नत ऊर्जा प्रौद्योगिकियों के संबंध में अनुसंधान एवं वकिसा (R&D) में निवेश करने से ऊर्जा भंडारण, इलेक्ट्रिक वाहन और अन्य वैकल्पिक ईंधन के क्षेत्रों में सफलता मलि सकती है। यह भारत को दीर्घावधि में ओपेक पर नरिभरता कम करने और स्वच्छ एवं अधिक सतत ऊर्जा स्रोतों की ओर अपने संक्रमण को तीव्र करने में मदद कर सकता है।
- **सार्वजनिक परिवहन और इलेक्ट्रिक वाहनों को प्रोत्साहित करना:** सार्वजनिक परिवहन प्रणालियों और इलेक्ट्रिक वाहनों (EVs) के उपयोग को बढ़ावा देने से भारत की तेल खपत में पर्याप्त कमी आ सकती है। चार्जिंग इंफ्रास्ट्रक्चर का वसितार करने के साथ EVs अपनाने के लिये प्रोत्साहन देने से सतत परिवहन विकल्पों की ओर तेज़ी से आगे बढ़ने में मदद मलि सकती है।
- **ऊर्जा कूटनीति में संलग्नता:** भारत ऊर्जा कूटनीति में सक्रिय रूप से संलग्न हो सकता है और निष्पक्ष एवं स्थिर तेल मूल्यों की वकालत करने के लिये अंतरराष्ट्रीय मंचों में भागीदारी कर सकता है। अन्य तेल आयातक देशों के साथ सहयोगात्मक प्रयास, ओपेक की नरिणयन प्रक्रिया को प्रभावित करने एवं अधिक संतुलित एवं पारदर्शी वैश्विक ऊर्जा बाज़ार का सृजन करने में मदद कर सकते हैं।

अभ्यास प्रश्न: भारत कच्चे तेल की अपनी मांग की पूर्तिके लिये ओपेक देशों पर अत्यधिक नरिभर है। ओपेक कच्चे तेल के अपने उत्पादन को कम कर रहा है और उसने उत्पादन में आगे और कटौती करने का नरिणय लिया है। इस कटौती के नहितार्थ की चर्चा कीजिये और इसके प्रभाव को न्यूनतम करने हेतु कुछ सुझाव दीजिये।

